## अहंकार

**मित्रों हर कोई एक सामान नहीं होता है। कोई अच्छा होता है तो कोई बुरा होता है। कोई मजबूत होता है तो कोई कमजोर होता है। कोई परीक्षा में अच्छा नम्बर्स लाता है तो कोई कम लाता है। लेकिन अच्छे नम्बर्स लाने वाले को कभी भी घमंड नहीं करना चाहिए। आज की यह हिंदी कहानी इसी पर आधारित है।**

एक **साधू** और एक डाकू **यमलोक** पहुंचे . **यमराज** ने कहा बताईये आपको **नरक** और स्वर्ग में से क्या दिया जाए और क्यों. दोनों आश्चर्य में पड़ गए कि क्या माजरा है.

इन सब का निर्णय तो स्वयं यमराज करते हैं. कुछ सोचकर डाकू ने यमराज से कहा प्रभु मैंने जिंदगी भर **पाप कर्म** किये, लोगों को तड़पाया तो यहाँ किस अधिकार से **स्वर्ग** की मांग कर सकता हूँ ?

अतः दंड की कामना करता हूँ और साधू ने कहा प्रभु मैंने **जप – तप** किये , पूण्य का कार्य किया अतः मुझे स्वर्ग की सुख सुविधाएं चाहिए .

यमराज ने डाकू को साधू की सेवा करने का आदेश दे दिया. डाकू ने सिर झुकाकर यम की आज्ञा स्वीकार कर ली. लेकिन साधू ने इसपर आपत्ति की. उसने कहा, " प्रभु! इस पापी के स्पर्श मात्र से ही मैं अपवित्र हो जाऊँगा. मेरी सारी **तपस्या** तथा भक्ति का पुण्य निरर्थक हो जाएगा. "

यह सुनते ही यमराज जी क्रोधित होते हुए बोले – इतने पाप करनेवाला और भोले व्यक्तियों को लुटने वाला इतना विनम्र हो गया और तुम्हारी सेवा करने को तैयार हो गया और एक तुम हो जो इतने वर्षों तक तपस्या करने के बाद भी अहंकार से मुक्त नहीं हो सके और यह न जान सके कि सबमें एक ही **आत्मतत्व** समाया हुआ है. तुम्हारी तपस्या अधूरी है. अतः अब तुम इस डाकू की रोज सेवा करोगे. यही तुम्हारा **प्रायश्चित** होगा .

इस कहानी का सन्देश यह है कि तपस्या वही **प्रतिफलित** होती है , अहंकार मुक्त हो . वस्तुतः अहंकार का त्याग ही तपस्या का मूल मंत्र है और यही भविष्य में प्रभु कृपा प्राप्ति का आधार बनाता है.

**कभी अहंकार नहीं करना चाहिए। अहंकार स्वयं का ही नाश करता है। अगर हमें परीक्षा में अच्छे नम्बर्स आते हैं तो भी घमंड नहीं करना चाहिए, बल्कि और भी अधिक नम्बर्स लाने का प्रयास करना चाहिए और कम नम्बर्स लाने वाले छात्रों का हौसला बढ़ाना चाहिए, जिससे वे भी अच्छे नम्बर्स ला सके।**

**जूता**

**अगर हमपर कोई मुसीबत आती है तो क्या हमें उसे नजरअंदाज करना चाहिए या फिर उसका उपाय ढूढना चाहिए और उपाय भी ऐसा हो जो कम खर्चीला हो और सबके लिए उपयुक्त हो सके। आईये पढ़ते हैं इसी पर आधारित एकहिंदी कहानी।**

जूता  इसे हर कोई पहनता है. जूते से आदमी का रंग और ढंग दोनों ही बदल जाता है. अगर यह पैरों में रहे तो आदमी का ढंग बदल जाता है और अगर यह सर पर पड़े तो रंग बदल जाता है. वैसे भी आजकल जूता बड़े ही फॉर्म में है.

कब ना जाने किस नेता का रंग बिगाड़ दे कुछ कहा नहीं जा सकता है. चलिए छोडिये यह बाते....क्या आपने कभी गौर किया है कि रंग और ढंग बिगाड़ने वाला यह जूता आया कहां से....चलिए हम आपको एक कहानी बताते है...जिससे आपको पता चलेगा कि यह जूता आया कहां से.

बहुत समय पहले की बात है. एक राज्य में एक बहुत ही बड़ा राजा था. उसके राज्य की प्रजा बहुत ही खुश थी. वह अक्सर अपने क्षेत्रों में  देख-रेख के लिए जाता है .

इस बार वह राज्य के उत्तरी क्षेत्र में बहुत दिनों सी नहीं गया था. उसे अपने खबरियों के माध्यम से उत्तरी क्षेत्र में हो रहे भ्रष्टाचार की जानकारी मिल रही थी.

एक दिन राजा ने अचानक ही उत्तरी क्षेत्र में जाने की योजना बनाई. वह जब राज्य के उत्तरी क्षेत्र में पहुंचा तो उसे बहुत सी खामियां दिखीं. उसने मंत्रियों और दरबारियों को खूब फटकार लगाई और तुरन्त ही सारे कार्यों को पूरा करने का आदेश दिया.

उन  सभी कमियों में से एक बड़ी कमी थी  कि सड़कें बहुत ही खराब हो गयी थीं. जगह-जगह कंकड़ - पत्थर निकल आये थे. तब उसने अपने मंत्रियों को तुरंत ही पूरी की पूरी सड़क पर चमडा बिछाने का आदेश दे दिया.

अब सभी मंत्री चिंता में  पड़ गए. आखिर इतने जल्दी इतनी बड़ी सड़क पर चमडा कैसे बिछाया जाए. तब एक दरबारी ने हिम्मत करके कहा राजन अगर गुस्सा ना करें तो एक बात कहूँ. तब राजा ने कहा ठीक है बोलो.

तब उस दरबारी ने कहा कि महाराज रोड को बनाने का प्रस्ताव पारित हो गया है. अगर रोड को अन्य तरीकों से बेहतर करके लोगों  के पैरों के जूते के चमड़े के टुकड़ों से ढकवा दिया जाए तो अच्छा रहेगा और उससे लोगों को गर्मियों में जलती हुयी सडकों, बारिश में फिसलन और सर्दियों में भी आराम मिलेगा.

राजा को यह बात पसंद आई और उन्होंने उस दरबारी को सम्मानित किया. इसका  मोरल  यह है कि कोई भी आइडिया छोटी नहीं होती, बस उसे समझाने और समझने वाला चाहिए.

कोई भी उपाय या उपाय देने वाला कभी छोटा नहीं होता है। अगर कोई भी इंडिया सही हो और उसमें लाभ हो तो उसे जरूर अपनाना चाहिए।